11 अक्टूबर, 54 वें दीक्षा दिवस पर विशेष

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मुनिश्री विनय कुमार जी 'आलोक'

भारत की भूमि पर अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया है। इस भूमि पर अनेक धर्म सम्प्रदाय प्रादुर्भूत हुए है। उनमें से एक है–जैन धर्म। जैन धर्म का संबंध भगवान ऋषभ आदि चौबिस तीर्थंकरों के साथ है। उनमें अंतिम और चौबीसवें तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। इसके बाद जैन धर्म में अनेक प्रभावशाील आचार्य हुए हैं।

आचार्य श्री भिक्षु द्वारा प्रादुर्भावित सम्प्रदाय 'तेरापंथ' नाम से प्रख्यात है। तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य श्री तुलसी भारत के प्रख्यात धर्मगुरू थे। उनके उतराधिकारी और तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के अनेक विद्वान शिष्य है। सैंकड़ों साधु–साध्वियां आचार्य श्री महाप्रज्ञ के दिशा–निर्देशन में देशभर में पदयात्रा कर नैतिक जन जागरण का कार्य कर रहे है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के मनीषी शिष्य मुनि श्री विनय कुमार जी 'आलोक' विद्वान लेखक, कवि होने के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास व समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापन के लिए सदैव क्रियाशील रहते है। राजस्थान के चूरू जिले के सरदारशहर कस्बे में 30 जनवरी, 1937 को जन्में मुनिश्री विनय कुमार 'आलोक' आज 73 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद भी अपनी साधना और मानव जाति के लिए सतत प्रयत्नशील है।

मुनिश्री 'आलोक' ने विक्रम संवत 2013, कार्तिक बदी अष्टमी को अपनी जन्म स्थली सरदारशहर में ही तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि दीक्षा प्राप्त की। महामानव युग द्रष्टा आचार्य श्री तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में रहकर मुनिश्री आलोक ने न केवल अपना जीवन रूपान्तरण किया है बल्कि उनसे प्राप्त ज्ञान, साधना व तपस्या को अंगीकार कर जन मानस को भी सुख व शांतिमय जीवन जीने की प्रेरणा दी है। मुनि श्री का सौम्य एवं शान्त स्वभाव तथा मृदुतापूर्ण व्यवहार उनकी विशिष्ट संतता का परिचायक है।

मुनिश्री आलोक ने सदैव पुरूषार्थ का जीवन जीया है। उन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के मिशन अहिंसक चेतना का जागरण, नैतिक मूल्यों का विकास में अहम योगदान दिया है। मुनिश्री के मौलिक विचारों ने सामान्य जनता को ही नहीं, देश के शीर्षस्थ महानुभावों को भी प्रभावित किया है। प्रवचन कला के साथ ज्ञान की आराधना में अब तक मुनिश्री की लगभग 30 पुस्तकों का प्रकाशन हो चूका है। मुनिश्री के प्रथम कृति ''कालजयी'' एक कविता संकलन है, जिसका वर्ष 1970 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती ईन्दरा गांधी ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में विमोचन किया। इसके बाद राष्ट्रपति भवन में पूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने मुनिश्री की पुस्तक ''बंद दायरे'' का लोकार्पण किया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री आवास पर मुनिश्री की पुस्तक ''अहोदानम खण्ड काव्य'' का लोकार्पण किया।

मुनिश्री से देश विदेश के अनेक गणमान्य लोगों ने भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया है। इनमें अध्यात्म, शिक्षा, संस्कृति, कला व खेल जगत के साथ साथ अनेक राजनैतिक व उधोगपतियों ने मुनिश्री मार्गदर्शन प्राप्त किया है। मुनिश्री से मिलने वालों में देश के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद, प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू, पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्ण, फखरूदीन अली अहमद, ज्ञानी जैलसिंह, शंकरदयाल शर्मा, सिने जगत के अमिताभ बच्चन, शुत्रध्न सिन्हा आदि अनेक विशिष्ट लोग शामिल है।

मुनिश्री ने देशभर में अब तक 73 हजार किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए कोलकता, मुम्बई, अहमदाबाद, हरियाणा, यू.पी., बिहार आदि अनेक स्थानों पर चातुर्मास सम्पन्न किये है। दिल्ली में मुनिश्री ने 13 एवं चंडीगढ़ में 5 चातुर्मास पूरे किये है। मुनिश्री ने वर्ष 1994 व 2003 में जयपुर में चातुर्मास किया है। अपने पिछले जयपुर चातुर्मास के दौरान मुनिश्री ने जयपुर की कच्ची बस्तियों में स्वयं जाकर वहां नशामुक्ति का सघन अभियान चलाया था, जिससे वहां पर रहने वालें लोगों ने नशा मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। मुनिश्री के सान्निध्य में भारतीय प्रशासनिक सेवा व भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों की भी एक सफल संगोष्ठी रखी गई थी।

इस वर्ष 2009 में मुनिश्री विनय कुमार जी ''आलोक'' एक बार फिर जयपुर के अणुविभा केन्द्र, मालवीयनगर में अपना चातुर्मास करने जा रहे है। 1 जुलाई, 2009 को मुनिश्री गौरव टॉवर, मालवीय नगर के सामने स्थित अणुविभा केन्द्र, जयपुर में चातुर्मास प्रवेश करेंगे। गत वर्ष आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने यहां अपना चातुर्मास किया था। मुनिश्री के सान्निध्य में इस बार धार्मिक आयोजनों के साथ साथ साप्ताहिक जैन दर्शन व्याख्यान माला तथा व्यसन मुक्ति व शाकाहार अभियान चलाया जायेगा।

————